Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

卐 श्रीमते रामानन्दाय नमः 卐

श्री श्री १००८ पं० हरिनामदास वेदांती जी महाराज, जानकीघाट, अयोध्या

का आशीर्वाद प्राप्त

श्रीरामार्चा-माहात्म्य

(राम बोधनी टीका सहित)

सम्पादक – सन्त निर्मल महाराज जी

प्रकाशक –

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर, इलाहाबाद-३

ब्रांच-जानसेनगंज, इलाहाबाद-३ (उ०प्र०)

मूल्य रु० २५/- मात्र

◆ श्री गणेशाय नमः ◆

* नम्र निवेदन *

प्रिय महानुभाव !

श्रीरामार्चा माहात्म्य अखिल ब्रह्माण्ड नायक चराचर के स्वामी भूत-भावन शंकर भगवान की अमृतमय वाणी है, जो कि शिव संहिता के भव्योत्तर खण्ड के उमा महेश्वर सम्वाद से संकलित की गई है। इसे तपोनिष्ट वैष्णव कुल भूषण श्री रामवल्लभाशरण महाराज जी द्वारा शिव संहिता से निःसारित करके जयपुर से प्रकाशित कराया था। फिर इसे श्री श्री १००८ पं० हरिनामदास वेदान्ती जी के आदेशानुसार प्रकाशित किया गया था तथा अब मेरे द्वारा इसका सरल अनुवाद एवं सम्पादन किया गया है। श्रीरामार्चा एक प्रकार से लघु यज्ञ ही है। इसे आप शक्ति अनुसार वृहद् तथा लघु रूप में भी कर सकते हैं। श्रीरामार्चा माहात्म्य की अब तक जो पुस्तकें छपी हैं यह उनमें सर्वोत्तम एवं राम बोधनी टीका युक्त है। इस **संशोधित संस्करण** में शुद्धता का विशेष ध्यान रखा गया है, फिर भी यदि कोई त्रुटि आपके संज्ञान में आये तो हमें अवश्य सूचित करें।

आशा है भगवद्भक्तों के लिये यह बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

विनीत –

सन्त निर्मल महाराज जी

श्रीसीतापतिर्जयति

* विषय-सूची *

Scanned with CamScanner

युगल-चरण-चिह्न

भगवान श्री राम के चरण-चिह्न

श्री जानकीजी के चरण-चिह्न

॥ श्री हनुमते नमः ॥

प्रधान पूजा-चक्रम्

Scanned with CamScanner

एकविंशति कोष्ठकं श्री रामार्चा मंत्रम्

पूर्व

१. ॐ श्री माहेश्वर्यै नमः
२. ॐ श्री गणाधिपतये नमः
३. ॐ श्री महाशक्तये नमः
२६. ॐ श्री गंगायै नमः
३६. ॐ अष्टमंत्रिभ्यो नमः
३७. ॐ सपत्नीकाय दशरथाय नमः
४१. ॐ श्री हनुमते नमः
४२. ॐ श्री अयोध्यायै नमः

आग्नेय

१२. ॐ लोकमात्रे नमः
११. ॐ दशदिक्पालेभ्यो नमः
२३. ॐ महेश्वराय नमः

दक्षिण

२७. ॐ महालक्ष्म्यै नमः
२७. ॐ भूशक्तये नमः
२८. ॐ वह्निबीजायनमः
२९. ॐ केशरिणे नमः
३०. ॐ सुषेणाय नमः
३१. ॐ ऋक्षराजाय नमः
३२. ॐ अगदाय नमः
३३. ॐ सुग्रीवाय नमः

नैऋत्य

१३. ॐ महादेव्यै नमः
१६. ॐ लोकपालेभ्यो नमः
१५. ॐ वास्तुदेवेभ्यो नमः

पश्चिम

५. ॐ महादुर्गायै नमः
१०. ॐ मनवे नमः
३४. ॐ विमलादिशक्तिभ्यो नमः
३९. ॐ सपत्नीकाय शत्रुघ्नाय नमः
३८. ॐ सपत्नीकाय लक्ष्मणाय नमः

४३ ॐ श्री सीतारामाभ्यां नमः

वायव्य

१४. ॐ देवमात्रे नमः
१८. ॐ वशिष्ठादिभ्यो नमः
१९. ॐ अधिप्रत्यधि देवेभ्यो नमः

उत्तर

६. ॐ गायत्र्यै नमः
७. ॐ सावित्र्यै नमः
८. ॐ सरस्वत्यै नमः
९. ॐ सर्वमातृभ्यो नमः
२५. ॐ श्री सरय्वै नमः
३५. ॐ विभीषणाय नमः
३५ ॐ सपत्नीकाय भरताय नमः

ईशान

ॐ बुद्धिदेव्यै नमः
२१. ॐ नवग्रहेभ्यो नमः
२०. ॐ ब्रह्मणे नमः

卐 संकल्प के अनन्तर अर्चक अंजलि में यवाक्षत तिल लेके जिस दिशा का जो देवता हो, उसका आवाहन मंत्र पढ़ के चौकी के ऊपर उसी दिशा के कोष्ठ पर यवाक्षत तिल धरे और उस पर उस देवता का पाद्यादि से पूजन करे ।

पूजनीय श्री हरिनाम दास जी ''वेदान्ती''

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

श्रीराम की (रामार्चा) पूजा क्यों

श्री राम-कथा मानवता की कथा है । चर्तुयुगों के अवतारों में सर्वश्रेष्ठ भगवान श्रीराम आदर्श पुत्र, आदर्श ब्रह्मचारी, अद्वितीय धनुर्धारी, सत्यवादी, आदर्श गृहस्थाश्रमी, आदर्श पति, आदर्श राजा, लोकनायक, आदर्श साधुसेवी, आदर्श दुष्ट संहारक, आदर्श शरणागत-वत्सल, परम उदार, आदर्श सदाचारी, आदर्श-व्रती, धर्मरक्षक, सर्वप्रिय, सर्वदृष्टा, सर्वान्तर्यामी और सर्वशक्तिमान हैं । सम्पूर्ण जगत के लिये उनका चरित्र आदर्श स्वरूप है । उनके आचरणों से ही हमें अनुकरणीय शिक्षा मिलती है ।

मर्यादा-पुरुषोत्तम् भगवान श्रीराम का प्रादुर्भाव अन्य सम्पूर्ण अवतारों की अपेक्षा विशेष महत्व रखता है । आदर्श सम्मुख होने पर मनुष्य को शिक्षा ग्रहण करने में अत्यन्त सुभीता होता है । श्रीराम को सदादर्शों का कोष कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी । मनुष्य उनके चरित्र से सब तरह की सत् - शिक्षा प्राप्त कर सकता है । मनुष्यों की सत् -शिक्षा और कल्याण के लिए जितना गुरुपद कार्य श्रीरामचरित कर सकता है उतना अन्य किसी का चरित्र नहीं कर सकता । श्रीराम

Scanned with CamScanner

का 'मर्यादा-पुरुषोत्तम्' नाम इसी कारण से पड़ा है। मंगलमय श्रीराम का चरित्र जीवन में सुख, शान्ति एवं सारतत्व का बोध कराने वाला है, परन्तु मर्यादा पुरुषोत्तम् श्रीराम के नाम की तो महिमा ही अपार है। वह तो कलियुग में भवसागर से पार होने के लिये जहाज के समान है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए संत शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है–

कलियुग केवल नाम अधारा, सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा।

पारब्रह्म परमेश्वर श्रीराम जी ने अन्य अवतारों की तरह वाणी मात्र से कहकर ही नहीं, बल्कि स्वयं अपने दैनिक आचरणों द्वारा मानव मात्र को उच्च कोटि की शिक्षा दी है। इस प्रकार द्विभुज, धनुर्धारी अवधेश्वर श्रीराम का स्मरण, भजन, ध्यान एवं कीर्तनादि ही परम कल्याणकारी है।

अत: मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन-दृष्टान्त को प्रकाश-स्तम्भ बना कर उनके जीवन चरित्र से अपने दैनिक जीवन में प्रेरणा लेनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

संक्षेपत: श्रीरामार्चन-सामग्री

१. शुद्ध जल मृत्तिका से भूमि शोधन ।
२. मण्डप-रचना आम्रादि पल्लव से ।
३. कदलीस्तम्भ ८ या ४, या पत्ता ।
४. लाल पताका ८ या ४ ।
५. बाँस की पतली छड़ी पताका हेतु ८ या ४ ।
६. दो या तीन हाथ की चौखुटी चौकी-१ ।
७. बिछाने के लिये पीत वस्त्र – सवा दो या सवा तीन हाथ का चौकोर ।
८. सवा दो या सवा तीन हाथ का चौखूंटा अरुण वस्त्र चांदनी के वास्ते
९. चावल का चूर्ण नील, पीत, उजला, काला व पीत अरुण रंगा हुआ व गुलाल १२५-१२५ ग्राम ।
१०. आम्रपल्लव का तोरण एवं पंचपल्लव (पीपर, गूलर, पाकड़, बट, आम)
११. कलश-५, ढकना-५ (कलश पर पूर्णपात्र रखने के लिए चावलचूर्ण ।
१२. (रामपात्र) मट्टी की परई - २५ ।
१३. पुरवा या सिकोरा या कुल्हड़ - २५ ।
१४. दियाली - ५० ।
१५. घृत वत्ती - ५० ।
१६. घृत सवा पाव (३०० ग्राम) ।
१७. पुष्प माला - ५० या ५ ।
१८. पुष्प सवा पाव से कम नहीं ।
१९. चावल सवा दो किलो (पीत रंगा)
२०. तिल दो छटांक (१०० ग्राम)
२१. यव दो छटाक (१०० ग्राम) ।
२२. दूर्वा ।
२३. तुलसीदल और तुलसी मन्जरी ।
२४. बिल्वपत्र २ सुदी एवं बिल्व फल ।
२५. पंचामृत (दूध, दही, घृत, मधु, चीनी) मधुपर्क (दही, जल, घी, चीनी या गुड़, मधु)
२६. पान बीड़ा २५ या ५ ।
२७. पान नागरबेल (छुट्टा) १२० या ५० ।
२८. सुपारी १२० या ५० ।
२९. पैसे –(एक तरह की मुद्रा, सिक्के) छोटी या बड़ी शक्त्यानुसार ४१ या ११४ ।
३०. केशर ।
३१. कपूर ।

Scanned with CamScanner

३२. चन्दन, रोली, सिन्दूर ।
३३. धूप, गुग्गुल, अगरबत्ती ।
३४. अतर ।
३५. बताशा सवा किलो या ८०० ग्राम ।
३६. यज्ञोपवीत २५ या ५ जोड़ा ।
३७. लड्डू सवा किलो या ७५० ग्राम ।
३८. उत्तम नैवेद्य (प्रधान प्रसाद) पाँच सेर से कम न हो, अधिक जहाँ तक हो सके ।
३९. समयानुकूल नाना प्रकार के फल – केला, सेब आदि ।
४०. जटा युक्त नारियल - १ ।
४१. दक्षिणा द्रव्य (यथाशक्ति) प्रधान देव के लिए ।
४२. नारियल की गरी सरस - १ ।
४३. मेवा – किशमिस आदि २५० ग्राम ।
४४. श्रीरामजी के लिए दो उत्तम वस्त्र एवं श्री जानकी जी के लिये उत्तम वस्त्र (सौभाग्य वस्तु के साथ)
४५. कलशादि के लिए सुन्दर वस्त्र ।
४६. तृतीय आवरण में श्री हनुमान जी का लाल लंगोटा यथाशक्ति तदभावे पुष्प । एक हाथ का कपड़ा स्नानादि के लिए ।
४७. अन्य देवताओं के लिए ११४ वस्त्र छोटे-बड़े यथाशक्ति तदभावे पुष्प ।
४८. कथा के प्रारम्भ में पुस्तक-पूजन एवं श्री व्यास जी का पूजन करे और समाप्ति पर भोजन वस्त्र दक्षिणा से श्रीव्यास जी को संतुष्ट करे ।

पाद्यवस्तु :– दूर्वा, विष्णुकान्ता, शाँवाधान्य, कमल ।
अर्घ्यवस्तु :– सरसों, अक्षत, कुशाग्र, तिल, यव, चन्दन, जायफल, पुष्प ।
आचमनवस्तु :– इलायची, लौंग, कंकोल, जायफल ।
स्नानवस्तु :– कूट, मजीठ, हल्दी, मोथा, शिलाजीत, चंपा, बच, कपूर, खस ।
इन वस्तुओं के अभाव में इनके नाम लेकर तुलसीदल छोड़े ।

पूजन प्रारम्भ

(देव पूजा, कलश स्थापना एवं पूजन विधि)

तीर्थ नदी, गंगाजी, सरोवर, कूपादि के शुद्ध जल से स्नान करने के पश्चात् पवित्र शुद्ध वस्त्र धारण करे और मृगछाला, कुशा या ऊन के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर आसन-शुद्धि दायें हाथ से आसन का स्पर्श करते हुए, निम्न मन्त्र से जल छिड़ककर करे।

पृथ्वी-पूजन मंत्र

ॐ पृथ्वित्त्वयाधृता लोका देवि त्वं विष्णुनाधृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

तत्पश्चात त्रिकोण मण्डल बनाकर जल, चन्दन, अक्षत, रोली, पुष्पादि से निम्न मंत्र से पृथ्वी पूजन करे ।

आसन-शुद्धि मंत्र

ॐ पृथिव्यै नमः । ॐ आधार शक्तये नमः ।
ॐ कूर्माय नमः । शेषनागाय नमः । ॐ अनन्ताय नमः।।

पुनः उस पर शुद्ध जलपूर्ण-पात्र रखकर आम्रपल्लव, कुश या पुष्प चढ़ाकर गंगादि नदियों का आवाहन कर निम्न मंत्र से कलश स्थापन, पूजन एवं नमस्कार करे ।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।

शरीर-शुद्धि मन्त्र

आम्रपल्लव, कुशा या पुष्प से अपने ऊपर निम्न मंत्र से जल छिड़के ।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः वाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।
ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु ।

शिखा बन्धन मन्त्र

चिद्रूपिणि महामाये ! दिव्य तेजः समन्विते !
तिष्ठ देवि ! शिखामध्ये तेजो वृद्धि कुरुष्व मे ।।

यज्ञोपवीत धारण-मन्त्र

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्ताद् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।

Scanned with CamScanner

चन्दन-धारण मन्त्र

चन्दनं वन्दते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् ।
आपदां हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा ।।

आचमन-मन्त्र

निम्न मंत्र से तीन बार आचमन करे ।

ॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः।

ॐ हृषीकेशाय नमः (से हाथ धो ले।)

अब यजमान को आचार्य निम्न मन्त्र से तिलक करे ।

ॐ दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे,
सु प्रजायत्वाय सहसां अथो जीव शरदः शतम् ।।

तत्पश्चात् प्राणायाम करे । इष्टदेव का स्मरण एवं गुरु-स्मरण कर दायें हाथ में अक्षत पुष्पादि लेकर स्वस्ति वाचन करे अथवा आचार्य स्वयं स्वस्ति वाचन एवं माङ्गलिक श्लोकों का पाठ करे ।

।। स्वस्तिवाचनम् ।।

स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पतिर्द्दधातु ।।१।।

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षुसो विश्वे नो देवाऽअवसाऽऽगमन्निह ।।२।।

भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः ।।३।।

शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रानश्चक्रा जरसन्तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्यारी रिषताऽऽयुर्गन्तोः ।।४।।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः ।
विश्वेदेवाऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्ज्जातमदितिर्जनित्वम् ।।५।।

Scanned with CamScanner

दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे सुप्रजात्वायसहसाअथोजीव शरदः शतम् ।।६।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष छं शान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिरोषधयः शान्तिः
व्वनस्पतयः शान्तिः व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः ।
सर्व छं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।७।।

यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु ।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ।।८।।

ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।
ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ।।९।।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।१।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।२।।

अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्व विघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।।३।।

हाथ का अक्षत और पुष्प गणेश गौरी पर चढ़ा दे ।

अब हाथ जोड़ कर प्रणाम करे -

श्री मन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृ पितृ चरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

दाहिने हाथ से गौरि, गणेश और कलश के स्थापन के लिए भूमि का स्पर्श निम्न मंत्र से करे –

भू स्पर्श-मंत्र

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथ्वीम् यच्छ पृथ्वींदृ ꣳ ह पृथ्वीं मा हि सीः ।।

अब निम्न मन्त्र से गणेश जी का स्पर्श करे –

ॐ गणानांत्वागणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहेव्वसोमम आहमजानि गर्ब्भधमात्वम-जासिगर्ब्भधम् ।।

फिर गौरि का निम्न मन्त्र पढ़ते हुए स्पर्श करे –

गोमय स्पर्श - मंत्र

ॐ मानस्तोके तनयेमान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्रुद्रभामिनौ वधीर्हविष्मन्तः सदमित्व हवामहे ।

निम्न मन्त्र द्वारा कलश के नीचे रखे धान्य को छुवे

धान्य स्पर्श - मंत्र

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषेधान्देवोवः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषेत्वामहीनाम्पयोसि ।।

निम्न मन्त्र से कलश स्पर्श करे –

सप्त धान्य या कलश स्थापन एवं स्पर्श-मंत्र

ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वाविशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जानिवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्षोरुधारा पयस्वतीपुनर्मा विशताद्रयिः ॥

कलश में जल

निम्न मन्त्र बोलते हुए कलश में जल छोड़े -

ॐ वरुणस्योत्तम्भन मसि वरुणस्यस्कम्भर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत-सदनमसि वरुणस्यऽऋत सदन मासीद् ॥

कलश में चन्दन या रोली

निम्न मन्त्र से कलश में गन्ध चन्दन या (रोली) छोड़े –

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टाम् करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

कलश में ओषधि

कलश में ओषधि छोड़े (अभाव में अक्षत छोड़े) –

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रि युगम्पुरा।
मनैनु बभ्रूणामह शतन्धामानि सप्त च ॥

Scanned with CamScanner

कलश में दूर्वा

निम्न मन्त्र से कलश में दूब डाले –

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ।।

निम्न मन्त्र से आम-पल्लव को छोड़े –

ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ।
स सस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ।।

कलश में सप्त मृत्तिका

निम्न मन्त्र से कलश में सप्तमृत्तिका (अभाव में अक्षत) छोड़े –

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्म्म सप्रथाः ।।

कलश में ताम्बूल

निम्न मन्त्र से पान डाले –

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ चक्षुषे स्वाहा। ॐ श्रोत्राय स्वाहा । ॐ वाचे स्वाहा । ॐ मनसे स्वाहा ।।

Scanned with CamScanner

कलश में पूगीफल (सोपारी)

निम्न मन्त्र से सोपारी डाले –

ॐ याः फलिनीर्या अफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणी ।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ह सः ॥

कलश में कुश

निम्न मन्त्र से कलश में कुश डाले –

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

कलश में (द्रव्यादि या सुवर्ण)

इसके बाद कलश में द्रव्यादि छोड़े –

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदधार पृथ्वीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

कलश में वस्त्र-वेष्ठन

निम्न मन्त्र से कलश को वस्त्र से आच्छादित करे अथवा कलावा बाँधे –

Scanned with CamScanner

ॐ युवा सुवासाः परिवीत अगात् सउश्रेयान् भवति जायमानः तंधीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसाः देवयन्तः ॥

कलश पर यव-पूर्ण पात्र एवं नारियल

निम्न मन्त्र से कलश पर यव-पूर्ण पात्र रखे –

पूर्णादर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज शतक्रतो ॥

कलश के पूर्ण पात्र पर लाल वस्त्र-वेष्ठित नारियल निम्न मंत्र से रक्खे –

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च ते पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणमुंमइषाणः सर्वलोकं मइषाणः ॥

निम्न मन्त्र से कलश पर जलता हुआ दीपक रखे –

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्योज्योतिः ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निवर्चो ज्योतिवर्चः स्वाहा, सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

कलश स्थापन के पश्चात् आगे लिखी विधि से पूजन करना चाहिए।

*****

Scanned with CamScanner

पूजन - विधि

हाथ में पुष्प, अक्षत लेकर निम्न मन्त्रों से पृथिवी, गणेश, गौरि और कलश (वरुण) पर छोड़े –

पृथ्वी पर (१) –

ॐ स्योना पृथिवी नो भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छ नः शर्म्म सप्रथाः।

गणेश पर (२) –

ॐ गणानान्त्वा गणपति हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति हवामहे वसोमम आहमजानि गर्ब्भधमात्वम-जासिगर्ब्भधम् ॥

गौरी पर (३) –

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मइषाण सर्वलोकम्मइषाण ॥

वरुण पर (४) –

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुश   समान आयुः प्रमोषीः ।।

आवाहन –

अब पुनः अक्षत लेकर उक्त देवों का आवाहन करने के लिए निम्न मन्त्र पढ़े और नाम लेकर उन पर उस अक्षत को छोड़े –

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ समिमन्दधातु विश्वेदेवा सइहमादयन्ता मोम्प्रतिष्ठ ।।

यह कहकर पृथिवी पर अक्षत छोड़े ।

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः । पृथिवीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

Scanned with CamScanner

यह बोलते हुए गणेश जी पर अक्षत छोड़े ।

ॐ भूर्भुव स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । भो गणेश ! भवान् आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

इससे गौरी पर अक्षत छोड़े ।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः। गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

इससे कलश पर अक्षत छोड़े ।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः । वरुणं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च ।

इन देवों के आवाहन के पश्चात् उसी कलश पर आदि-देव ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तथा सभी मातृकाओं का पुनः अक्षत लेकर निम्न मन्त्र से आवाहन करे और उस पर छोड़े –

कलश का स्वरूप

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ।।

Scanned with CamScanner

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तदीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ।।
अङ्गैश्च सहिता सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ।।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः ।।

ॐ कलशाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः !

अब पृथ्वी, गौरि, गणेश तथा कलश चारों का यथाविधि पूजन करे ।

अथ कलश प्रार्थना -

देवदानव संवादे मथ्यमाने महादधौ ।
उत्पन्नोऽसि यदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम् ।।
त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ।।
शिवं स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वे देवाः सपैतृकाः ।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भवः ।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्तावत् त्वं सन्निधो भव ।।

संकल्पः – ॐ आद्यपुराण पुरुषोत्तमाय ब्रह्मणे नमः ।

ॐ अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्ते विक्रम सम्वत्सरे *(अमुक)* संख्यके शालिवाहनशाके *(अमुक)* अयने *(अमुक)* ऋतौ *(अमुक)* मासे *(अमुक)* पक्षे *(अमुक)* तिथौ *(अमुक)* वासरे (अमुक) नक्षत्रे *(अमुक)* राशिस्थिते चन्द्रे *(अमुक)* राशिस्थिते सूर्ये *(अमुक)* राशिस्थिते गुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थितेषु सत्सु *(अमुक)* तीर्थे (अमुक) स्थाने *(अमुक)* गोत्रः *(अमुक)* नामाहं [१ – ग्रामपूजायां तु – 'एतद् ग्रामवासिनां नानागोत्राणां सकल जनानाम् एतत्पूजोपचारकाणाम् अन्यद् ग्रामवासिनां च' **इति** योज्यम्] सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट परिहारार्थं मनोऽभिवाञ्छितशुभफलप्राप्त्यर्थं च श्रीसीतारामप्रीतये यथाशक्तिसम्पादित

Scanned with CamScanner

सामग्र्या आवरणदेवतापूजापूर्वक श्रीरामार्चामाहात्म्य कथाश्रवणं [२ – अष्टयाम कीर्तन सर्वे-कीर्तन मण्डली द्वारा अष्टयाम् कीर्तनम्' इति चात्रयोज्यम्] च अहं करिष्ये इति ।। हरिः ॐ तत्सत् ।।

संकल्प के पश्चात् अर्चक अंजली में यव, अक्षत और तिल लेकर सम्पूर्ण आवरण देवताओं का आवाहन, जैसा कि आगे प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाग में अंकित है, करे ।

Scanned with CamScanner

प्रथमो भागः

माहेश्वरि ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शिवप्रिये ।
पूर्व भागे समातिष्ठ गृह्यतां पूजनं मम ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः ।१।

गणाधिपो ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ गजानन ।
पूर्व भागे समातिष्ठ पूजनं गृह्यतामिदम् ॥ ॐ गणाधिपतये नमः।२।

महाशक्ते ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे ।
पूर्व भागे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ महाशक्तये नमः ।३।

महालक्ष्मि ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ जगद्धिते ।
याम्य भागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।४।

महादुर्गे ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ सुरार्चिते ।
पीठस्य पश्चिमे भागे तिष्ठ स्वीकुरु पूजनं ॥ ॐ महादुर्गायै नमः ।५।

भो गायत्रि ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे ।
तिष्ठ पीठोत्तरे भागे पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ गायत्र्यै नमः । ६।

भो सावित्री ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे ।
तिष्ठ पीठोत्तरे भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे ।। ॐ सावित्र्यै नमः । ७।

सरस्वति ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रते ।
पीठस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां प्रगृह्यताम् ।। ॐ सरस्वत्यै नमः । ८।

नमो वः सर्वमातृभ्यः इहागच्छत तिष्ठत ।
पीठस्योत्तरे भागे पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ सर्वमातृभ्यो नमः । ९।

सिद्धि देवि ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ सुखप्रदे ।
ईशाने त्वं समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ सिद्धिदेव्यै नमः ।१०।

Scanned with CamScanner

बुद्धे ! नमोस्तुते मातरिहागच्छ सुभाषिणी ।
ईशाने हि समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे ।। ॐ बुद्धिदेव्यै नमः ।११।

लोक मातर्नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे ।
अग्निकोणे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ लोकमात्रे नमः।१२।

महादेवि ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ वरानने ।
नैर्ऋत्ये तिष्ठ देवेशि पूजनं स्वीकुरुष्व मे ।। ॐ महादेव्यै नमः ।१३।

देवमातर्नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपाम्बुधे ।
वायव्ये देवि संतिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ देवमात्रे नमः ।१४।

नमो वो वास्तुदेवेभ्यः इहागच्छतु तिष्ठतु ।
याम्यनैर्ऋत्ययोर्मध्ये पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ वास्तुदेवेभ्यो नमः ।१५।

Scanned with CamScanner

नमो वो लोकपालेभ्यः इहागच्छतु तिष्ठतु ।
रक्षोवरुणयोर्मध्ये पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ लोकपालेभ्यो नमः ।१६।

भो मनोत्वमिहागच्छ नमस्तुभ्यं सुखप्रदे ।
पश्चिम ह्युपविश्याथ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ मनवे नमः।१७।

नमो वः श्रीवसिष्ठाद्या इहागच्छत तिष्ठत ।
वायुवरुणयोर्मध्ये पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।।वशिष्ठादिभ्यो नमः ।१८।

अधिप्रत्यधिदेवेभ्यः इहागच्छत तिष्ठत ।
मारुतोत्तरयोर्मध्ये पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।।ॐअधिप्रत्यधि देवेभ्योनमः ।१९।

भो ब्रह्मंस्त्वमिहागच्छ नमस्तुभ्यं सुराधिप ।
उत्तरेशानयोर्मध्ये तिष्ठ गृह्णीष्व मेऽर्चनम् ।। ॐ ब्रह्मणे नमः ।२०।

Scanned with CamScanner

नमोऽस्तु वो नवग्रहा इहागच्छत तिष्ठत ।
ईशानपूर्वयोर्मध्ये पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ नवग्रहेभ्यो नमः ।२१।

नमो वो दशदिक्पाला इहागच्छत तिष्ठत ।
पूर्वाग्निकोणयोर्मध्ये पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐदशदिक्पालेभ्यो नमः।२२।

गौरीपते ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ महेश्वर ।
अग्निदक्षिणयोर्मध्ये तिष्ठ पूजा गृहाण मे ।। ॐ गौरीपतये नमः ।२३।

* इति प्रथमो भागः *

द्वितीयो भागः

श्रीकोशलेन्द्र! नमस्तुभ्यमिहागच्छ सुखाम्बुधे।
मध्यभागे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐश्रीअयोध्यायै नमः ।२४।

श्री सरय्वीश्वराराध्ये नमस्तुभ्यं जगद्धिते ।
श्री कोशलोत्तरे भागे तिष्ठ पूजां प्रगृह्यताम् ।। ॐ श्री सरय्वै नमः ।२५।

गंगा देव्यै महाभागे इहागच्छ नमोऽस्तु ते ।
पूर्व भागे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ गंगादेव्यै नमः ।२६।

भोः भूशक्ते! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभ प्रदे ।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे ।। ॐ भूशक्तये नमः ।२७।

वह्निवीजनमस्तुभ्यमिहागच्छ सुरार्चितः ।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं संगृहाण मे ॥ ॐ वह्निवीजाय नमः ।२८।

भोः केशरिन्नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रत ।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ केशरिणे नमः ।२९।

भोः सुषेण ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद ।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे ॥ ॐ सुषेणाय नमः ।३०।

ऋक्षराज ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद ।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ॥ ॐ ऋक्षराजायनमः।३१।

भोः अङ्गद ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ दृढ़व्रत ।
याम्यभागे समातिष्ठ संगृहाण ममार्चनम् ॥ ॐ श्रीअङ्गदाय नमः ।३२।

भोः सुग्रीव ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ प्रभो प्रिये ।
दक्षिणेह्युपविश्याथ गृह्यतामर्चनं मम् ।। ॐ श्रीसुग्रीवाय नमः ।३३।

श्री विमलादिशक्तिभ्य इहागच्छत वो नमः ।
पश्चिमे ह्युपविश्याथ पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐ श्रीविमलादिशक्तिभ्योनमः ।३४।

विभीषणाय नमस्तुभ्यमिहागच्छ प्रभोः प्रिये ।
पीठकस्योत्तरे भागे पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।। ॐश्रीविभीषणाय नमः ।३५।

नमो वो मन्त्रिणश्चाष्टमिहागच्छत् तिष्ठत् ।
पूर्व भागे मया दत्तं पूजनं प्रतिगृह्यताम् ।।ॐअष्टमंत्रिभ्यो नमः ।३६।

* इति द्वितीयो भागः *

Scanned with CamScanner

तृतीयो भागः

श्रीमते चक्रवर्तीन्द्र ! इहागच्छ नमोऽस्तुते ।
पूर्वभागे समातिष्ठ श्री कौसल्यादिभिस्सह ॥
ॐ सपत्नीकाय श्रीदशरथाय नमः ।३७।

श्रीलक्ष्मण ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः ।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं संगृहाण मे ॥
ॐ सपत्नीकाय श्री लक्ष्मणाय नमः ।३८।

श्री भरत ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः ।
पीठकस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां गृहाण मे ॥
ॐ सपत्नीकाय श्री भरताय नमः ।३९।

श्री शत्रुघ्न ! नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः ।
पीठस्य पश्चिमे भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे ॥
ॐ सपत्नीकाय श्री शत्रुघ्नाय नमः ।४०।

श्री हनुमन्नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपानिधे ।
पूर्वभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरु प्रभो ॥
ॐ श्री हनुमते नमः ।४१।

* इति तृतीयो भागः *

अथ प्रथमोऽध्यायः

देवानेवं समावाह्य नाममन्त्रैः पृथक् पृथक् ।
पूजयेत्परया भक्त्या श्रीराम प्रीतिहेतवे ।४२।
अत्र ये पूजिता देवाः मया पूजोपचारकैः ।
सन्तुष्टाः सम्प्रयच्छन्तु मम्ह्याभीष्टफलं सदा ।४३।
ततः प्रधानपुरुषं श्रीरामं सीतयान्वितम् ।
महोत्कृष्टोपचारैश्च यथाशक्त्या समर्चयेत् ।४४।

*इति श्रीशिवसंहितायां भव्योत्तरखंडे श्रीरामार्चामाहात्म्ये आवरण-देवतानामावाहनपूर्वकपूजामन्त्र-वर्णनो नाम प्रथमोध्यायः समाप्तः *

अथ द्वितीयोऽध्यायः

प्रधानदेव (श्रीराम) पूजनम्

अथ प्रधानपूजा च कर्तव्या भक्त्या विधिपूर्वकम् ।
पुष्पाञ्जलि गृहीत्वा तु ध्यानं कुर्यात्परस्य च ।।१।।

अब विधिपूर्वक प्रधान पूजा करनी चाहिए । पुष्पाञ्जलि लेकर परम पुरुष परमात्मा श्रीराम जी का ध्यान करना चाहिए ।

ध्यानम् –

रक्ताम्भोजदलाऽभिरामनयनं पीताम्बराऽलंकृतम् ।
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्नवदनं श्रीसीतया शोभितम् ।।
कारुण्या-ऽमृतसागरं प्रियगणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितं ।
वन्दे विष्णु शिवादि सेव्यमनिशं भक्तेष्टसिद्धिप्रदम् ।।२।।

लाल कमलदल के समान सुन्दर नयन वाले, पीताम्बर से अलंकृत, श्याम शरीर वाले, द्विभुज, प्रसन्नमुख, करुणामृत के सागर स्वरूप, मित्रगणों और भ्रात्रादिकों लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न से सेवित, विष्णु शिवादि देवों से निरन्तर सेवन करने योग्य, भक्तों को अभीष्ट सिद्धि देने वाले श्रीसीता जी से सुशोभित (श्रीराम जी) की मैं वन्दना करता हूँ ।

ध्यान के पश्चात् पुष्पाञ्जलि लेकर रघूत्तम भगवान श्रीराम का आवाहन करना चाहिये ।

आवाहनम् –

आगच्छ देवदेवेश ! जानक्या सह राघव ।
गृहाण मम पूजां च वायुपुत्रादिभिर्युतः ।।३।।

आवहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

आसनम् –

सुवर्णरचितं राम दिव्यास्तरण शोभितम् ।
आसनं हि मया दत्तं गृहाण मणिचित्रितम् ।।४।।

इत्यासनं समर्पयामि ।

Scanned with CamScanner

पाद्यम्—

इदं पाद्यं मया दत्तं दिव्यं नरवरोत्तम ।
प्रसीद जानकीनाथ ! गृहाण सम्मुखो भव ।।५।।

इति पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्—

दिव्यौषधिरसोपेतं दिव्य-सौरभ संयुतम् ।
तुलसीपुष्पदर्भाढ्यमर्घ्यं मे प्रतिगृह्यताम् ।।६।।

इत्यर्घ्यम् समर्पयामि ।

आचमनीयम्—

सुगन्धिवासितं दिव्यं निर्मलं सरयूदकम् ।
गृहाणाऽऽचमनं नाथ ! जानक्या सह राघव ।।७।।

इत्याचमनीयं समर्पयामि ।

Scanned with CamScanner

मधुपर्कम् —

नमो रामाय भद्राय तत्वज्ञानस्वरूपिणे ।
मधुपर्क गृहाणेमं जानकीपतये नमः ॥८॥

इति मधुपर्कं समर्पयामि ।

पञ्चामृत स्नानं —

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयोदधि घृतं मधु ।
युतं शर्करयादेव गृहाण जगतीपते ॥ ९॥

इति पञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदक स्नानं —

दिव्यतीर्थाहृतैस्तोयैः सर्वौषधि समन्वितैः ।
संस्नापयाम्यहं भक्त्या प्रीयतां जानकीपते ॥१०॥

इति शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ।

वस्त्रम् –

सन्तप्त काञ्चनप्रख्यं पीताम्बरमिदं हरे ।
संगृहाण जगन्नाथ ! रामचन्द्र नमोस्तुते ॥११॥

इति वस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीतं –

यज्ञोपवीतं सौवर्णं मया दत्तं रघूत्तम ।
गृहाण सुमुखो भूत्वा प्रसीद करुणानिधे ॥१२॥

इति यज्ञोपवीतं समर्पयामि ।

अभूषणम् –

किरीटं कुण्डलं हारं कङ्कणाऽङ्गदनूपुरम् ।
नानारत्नमयं दिव्यं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥१३॥

इति भूषणं समर्पयामि ।

गन्धं –

प्रधानपुष्प सारा‍ढ्यस्तव पूजनकर्मणि।
प्रगृह्यतां दीनबन्धो! गन्धोऽयं मङ्गलप्रद ।।१४।।
इति गन्धं समर्पयामि ।

चन्दनं –

मलयाचल सम्भूतं शीतमानन्दवर्द्धनम् ।
काश्मीरघनसाराढ्यं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।१५।।
इति चन्दनं समर्पयामि ।

उत्तरीय वस्त्रं –

नमः श्रीरामचन्द्राय नमो मङ्गलमूर्तये ।
उत्तरीयमिदं वस्त्रं गृहाण करुणानिधे ।।१६।।
इत्युत्तरीय वस्त्रं समर्पयामि ।

Scanned with CamScanner

तुलसीदलं–

कोमलानि सुगन्धीनि मन्जरी संयुतानि च ।
तुलस्याः सुदलान्येव गृहाण रघुवल्लभ ।।१७।।

इति तुलसीदलं समर्पयामि ।

पुष्पमालां–

सौरभाणि सुमाल्यानि सुपुष्परचितानि च ।
नानाविधानि पुष्पाणि गृह्यतां जानकीपते ।।१८।।

इति पुष्पमालां समर्पयामि ।

दूर्वापत्रं–

दुर्वादलसमायुक्तं पत्रं पुष्पं सहाङ्कुरम् ।
यवं तिलं महाभाग ! गृह्यतां सीतया सह ।।१९।।

इति दूर्वापत्र पुष्पाङ्कुरादि समर्पयामि ।

अङ्गपूजां –

नमः श्रीजानकीनाथ ! सौन्दर्यादि गुणाम्बुधे ।
पाद-गुल्फादिष्वङ्गेषु ह्यङ्गपूजां गृहाण मे ॥२०॥

इत्यङ्गपूजां समर्पयामि ।

धूपं –

वनस्पतिरसोत्पन्नं सुगन्धाढ्यं मनोहरम् ।
धूपं गृहाण देवेश ! जानक्या सह राघव ॥२१॥

इति धूपं समर्पयामि ।

दीपं –

घृतवर्ति - समायुक्तं कर्पूरादि -समन्वितम् ।
दीपं गृहाण देवेश ! मम सिद्धिप्रदो भव ॥२२॥

इति दीपं दर्शयामि ।

Scanned with CamScanner

नैवेद्यं –

पूप मोदक - संयाव- पयः पक्वादिकं वरम् ।
निर्मितं बहुसंस्कारैर्नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥२३॥

इति नैवेद्यं निवेदयामि ।

जलं –

शीतलं स्वादु- शुद्धं च परातृप्तिकरं जलम् ।
समस्त - देवदेवेश ! प्रीत्यर्थ प्रतिगृह्यताम् ॥२४॥

इति जलं समर्पयामि ।

आचमनं –

सर्वौषधिरसोपेतं सौरभं सरयूजलम् ।
आचम्यं च मयादत्तं गृहाण करुणानिधे ॥२५॥

इत्याचमनं समर्पयामि ।

फलं–

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।२६।।

इति फलं समर्पयामि ।

शुद्ध आचमनं (पुनस्तथैवशुद्धाचमनं दद्यात्)

ताम्बूलं–

ताम्बूल पूगसंयुक्तं चूर्णखादिरसंयुतम् ।
लवङ्गादियुतं दिव्यं राघवं प्रतिगृह्यताम् ।।२७।।

इति ताम्बूलं समर्पयामि ।

प्रसादं–

आञ्जनेय महाभाग रामभक्ति महोदधे ।
प्रसादं रामचन्द्रस्य संगृहाण प्रसीद मे ।।२८।।

इति हनुमते प्रसादं समर्पयामि ।

भ्रातृ सुग्रीवकादिभ्यो देवेभ्यश्च यथार्हतः ।
प्रसादो रामचन्द्रस्य देवास्तुष्यन्ति तेन वै ॥२९॥

इति भ्रातृ सुग्रीवादिभ्यः प्रसादं समर्पयामि ।

राजोपचारं–

नृत्य - गीतादिवाद्यादि - पुराणपठनादिभिः ।
राजोपचारैरखिलैः संतुष्टो भव राघव ॥३०॥

इति राजोपचारं समर्पयामि ।

नीराजनं–

कर्पूरवर्ति संयुक्तं गोघृतेन सुपूरितम् ।
नीराजनम् गृहाणेदं कृपया भक्तवत्सल ॥३१॥

इति नीराजनं समर्पयामि ।

Scanned with CamScanner

पुष्पाञ्जलिम्—

मणि-सौवर्ण-माल्यैश्च युक्तं पुष्पाञ्जलिं प्रभो।
गृहाण जानकीनाथ! कृपया भक्त वत्सलः ।।३२।।

इति पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

सदक्षिणा श्रीफलं—

श्रीफलं स्वादु दिव्यं च सुधाधिकतरं प्रियम् ।
स-दक्षिणाम् गृहाणेदं प्रणतार्तिहरं! प्रभो ।।३३।।

इति सदक्षिणां श्रीफलं समर्पयामि ।

स्तुतिः—

श्रीवल्लभाऽनन्त जगन्निवास श्रीराम राजेन्द्र! नमो नमस्ते।
सदा सनाथं कुरु मामऽनाथं नाथ प्रभो! दीनदयालुमूर्ते।।३४।।

इति स्तुतिः ।।

अपराध क्षमापन –

उपचारैर्यथासाध्यैः यत्पूजा तु मया कृता ।
तत्सर्वं पूर्णतां यातु अपराधं क्षमस्व मे ॥३५॥

इत्यपराधक्षमापन मन्त्रः ।

प्रदक्षिणा मंत्र –

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च ।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे ॥३६॥

इति प्रदक्षिणा मन्त्रः । वार चतुष्टयम् ।

नमस्कार मंत्र –

राजेन्द्रपुत्राय परात्पराय, स्वाच्छाय सस्मेर-शुभाननाय ।
श्यामाय रामाय सह प्रियाय, नमः सदाऽभीष्ट फलप्रदाय ॥३७॥

इति नमस्कार मन्त्रः ।

प्रार्थना मंत्र –

सहप्रियस्त्वं हृदये वस प्रभो, मुखे यशोनाम गुणानुवादनम् ।
प्रीत्याऽर्चनं ते करवाणि सततं,प्रदेहि मह्यं कृपया कृपाम्बुधे ।।३८।।

दयाब्धे जानकीनाथ महाराजकुमारक ।
ममाऽभीष्टं कुरुष्वाद्य शरणागतवत्सल ।।३९।।

इति प्रार्थना मन्त्रः ।

शरण मंत्र –

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि त्वं गतिः परमेश्वर ।।४०।।

इतिस्तुत्वा शुभं तस्य माहात्म्यं श्रृणुयाद्विधे ।
तस्याऽऽशु राघवः प्रीत्या दद्यात्सर्वेप्सितं महत् ।।४१।।

इति शरण मन्त्रः ।

Scanned with CamScanner

हे ब्रह्मन् ! इस प्रकार स्तुति कर श्रीरामार्चा का मंगलमय माहात्म्य श्रवण करना चाहिए। ऐसा करने वाले अर्चक पर भगवान श्रीराम शीघ्र प्रसन्न होकर प्रेमपूर्वक सब महान् अभिलषित फल प्रदान करते हैं ।

इति श्रीशिवसंहितायां भव्योत्तरखण्डे श्रीरामार्चा माहात्म्ये प्रधानपूजा-
विधिवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ।।२।।

अथ तृतीयोऽध्यायः

कथा प्रारम्भः (श्रीरामार्चा माहात्म्य)

श्रीपार्वत्युवाच –

भगवन्सर्वधर्मज्ञ ! सर्वशास्त्र विशारद ।
लोकानामुपकारार्थं यत्नान्युक्तान्यनेकशः ।।१।।

तन्त्राणि यन्त्रजालानि मन्त्रभेदाश्च भूरिशः ।
स्तोत्राणि विविधान्येव योगयज्ञव्रतानि च ॥२॥

तपांसि चैव दानानि सर्वसिद्धिकराणि च ।
तत्राऽपि दुःखिता लोका नानाक्लेशसमन्विताः ॥३॥

धनहीनाः पुत्रहीनाः आधिव्याधिसमाकुलाः ।
न सिद्ध्यन्ति क्रियाः काश्चिल्लोकाः सन्ति श्रमार्दिताः ॥४॥

तस्मात्कथय सर्वज्ञ ! सद्यः प्रत्ययकारकम् ।
उपायं सर्वलोकानां सर्वाऽभीष्टार्थ सिद्धिदम् ।
सम्यग्विचिन्त्य विश्वेश येन सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥५॥

श्री पार्वती ने शिव से कहा –

बंदउँ पद धरि धरनि सिरु विनय करउँ कर जोरि।
बरनहु रघुबर विमल जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि।।

अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया।।

हे भगवन् ! सर्वधर्मज्ञ, सर्वशास्त्रों के विशारद, लोक कल्याण के लिए आपने अनेक तन्त्र, मन्त्र, विविध स्तोत्र, योग, यज्ञ और व्रतादि कहे हैं ।।२।। सर्व-सिद्धि करने वाले तप एवं दान कहे हैं, तथापि लोग दुःखित हैं, नाना प्रकार के क्लेशों से युक्त हैं । लोग धनहीन, पुत्रहीन, एवं आधि व्याधि (मानसिक और शारीरिक रोगादि) से व्याकुल हैं ।।४।। कोई क्रिया सिद्धि नहीं होती । लोग श्रम करके थक जाते हैं । इसलिए हे सर्वज्ञ प्रभो ! अच्छी तरह विचार कर शीघ्र विश्वास कराने वाला, सब प्राणियों को अभीष्ट सिद्धि देने वाला उपाय बताइये, जिससे निश्चय सिद्धि प्राप्त हो ।।१-५।।

Scanned with CamScanner

श्रीमहादेवोवाच –

धन्याऽसि कृतपुण्याऽसि पुण्यरूपाऽसि पार्वति ।
यतस्त्वं सर्वलोकानां हितं वाञ्छसि सर्वदा ॥६॥

श्रणु देवि ! प्रवक्ष्यामि प्रयत्नं परमाद्भुतम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण सिद्धिं प्राप्नोति दुर्लभाम् ॥७॥

यज्ञः श्रीरामचन्द्रस्य साधनानां च साधकः ।
धर्माऽर्थकाममोक्षाणां प्रापकस्तुष्टिपुष्टिदः ॥८॥

ब्रह्मा सृजति यज्ञेन विश्वं विष्णुश्च रक्षति ।
यज्ञेनाऽहं जगत्सर्वं नाशयामि वरानने ॥९॥

रामयज्ञं विना सिद्धिं नाप्नुयादन्यकर्मभिः ।
पूजा दानं जपं यज्ञं तपः कुर्यादऽखण्डितम् ॥१०॥

सिद्धिं न प्राप्नुयात् देवि! तस्माद्वक्ष्यामि सुव्रते ।
महायज्ञोत्तमां सर्वं तपोदानफलप्रदाम् ॥११॥

श्री महादेव जी बोले–

धन्य धन्य गिरिराज कुमारी, तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ।
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा, सकल लोक जग पावनि गंगा ॥
तुम्ह रघुवीर चरन अनुरागी, कीन्हिहु प्रश्न जगत हित लागी ।
रामकथा सुन्दर कर तारी, संशय विहग उड़ावनहारी ॥
रामकथा कलि विटप कुठारी, सादर सुनु गिरिराज कुमारी ।

हे पार्वती जी ! तुम धन्य हो, पुण्यरूपा हो, कृतपुण्या हो, क्योंकि तुम सर्वदा सब लोगों का कल्याण चाहती हो । हे देवि ! सुनो, मैं परम अद्भुत उपाय बतलाता हूँ, जिसके स्मरण मात्र से ही दुर्लभ सिद्धि प्राप्त हो जाती है । श्रीरामचन्द्र का यज्ञ सब साधनों का साधक है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कराने वाला, तुष्टि-पुष्टि (मानसिक शान्ति, संतोष और शारीरिक पुष्टि अर्थात् स्वास्थ्य) देने वाला है । हे वरानने ! ब्रह्मा-यज्ञ से ही विश्व की सृष्टि करते हैं, विष्णु इस यज्ञ से ही विश्व की रक्षा करते हैं और उसी यज्ञ से मैं (प्रलय काल में) रुद्र रूप से सारे जगत का नाश करता हूँ । मनुष्य अखण्डित पूजन, दान, जप, यज्ञ और तप करे, परन्तु श्रीराम यज्ञ (रामार्चा) बिना अन्य कर्मों से सिद्धि को नहीं प्राप्त करता है । श्रीरामयज्ञ सबको पूर्ण कर देता है । हे सुब्रते देवि पार्वति ! इस यज्ञ के किये बिना लोगों को सिद्धि नहीं मिल सकती, अतः तुम्हारे लिए मैं बड़े-बड़े यज्ञों से उत्तम एवं सम्पूर्ण तपस्या और दान का फल देने वाले श्रीरामार्चा नामक महायज्ञ का वर्णन करता हूँ ।। ६-११ ।।

Scanned with CamScanner

कामनासिद्धिदां सौम्यां सर्व विघ्नविनाशिनीम् ।
रामार्चा शोभने कृत्वा न कश्चिद् दुःखभाग् नरः ।।१२।।

रामार्चायाः परो यज्ञो रामार्चायाः परं तपः ।
रामार्चायाः परं दानं रामार्चायाः परं जपः ।।१३।।

रामार्चायाः परं पुण्यं नास्ति लोकेषु त्रिष्वपि ।
रामार्चनं परं सेव्यं वद्धोद्धारकरं परं ।।१४।।

महासिद्धिप्रदं सौम्यं सर्वकामफलप्रदम् ।
सर्वारिष्टहरं क्षिप्रं सर्वोपद्रवनाशनम् ।।१५।।

आधिव्याधिप्रहरणं वांछाधिकफलप्रदम् ।
पुत्रपौत्रादिसुखदं बलवीर्यविवर्धनम् ।।१६।।

राज्यदं नष्टराज्यानां निर्धनानां धनप्रदम् ।
दुर्भिक्षे वृष्टिजनकं महोत्पात - निवारणम् ।।१७।।

नाशनं शत्रुसैन्यानां मित्रवर्गविवर्धनम् ।
महाद्रारिद्र्य दौर्भाग्य दुःखितानां सुखावहम् ।।१८।।

सौभाग्य - सन्ततिकरं सर्वैश्वर्य - सुखप्रदम् ।
क्षयाऽपस्मारकुष्ठादि महारोग विनाशनम् ।।१९।।

ऋणभारप्रहरणं ग्रह-विग्रह वारणम् ।
क्रोधमात्सर्यहरणं दोषदुर्बुद्धिनाशनम् ।।२०।।

क्षमा-सौशील्य-सौहार्दसद्‌गुणानांप्रकाशनम् ।
त्रिकाल ज्ञान जननं षड् विकार-विनाशनम् ।।२१।।

मुक्तिदं च मुमुक्षुणाम् गतीनां गतिप्रदम् ।
महासंकष्टसन्तप्त चेतसां सुखवर्द्धनम् ॥२२॥

नान्यं पश्यामि देवेशि साधनं सकलेष्टदम् ।
रामार्चनं बिना देवि ! श्रुतं नैव कदाचन ॥२३॥

रामार्चा सिद्धिरूपा हि सर्वेषां श्रेयमिच्छताम् ।
किं होमैः सद्व्रतैस्तीर्थैः किं तपोभिः किमध्वरैः ॥२४॥

किमन्यैरर्चनैरुग्रैः साधनैश्च प्रयासदैः ।
रामार्चानेन भो देवि ! किंचिदिष्टं न दुर्लभम् ॥२५॥

यं यं चिन्तये कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
अन्यानि यानि लोकेऽस्मिन् साधनानि बहूनि च ॥२६॥

कदाचिन्नैव सिद्धयन्ति देवि ! रामार्चनं विना ।
रामार्चनमकृत्वा तु कुर्यादन्यव्रतादिकम् ॥२७॥
कल्पकोटि सहस्रेषु न तेषां फलभाग्भवेत् ।
ग्रहाणां च यथा भानुर्नक्षत्राणां च यथा शशी ॥२८॥
रामार्चनं परं देवि ! तथा सर्वसुकर्मणाम् ।
अत्र ते कथयिष्यामि कथां पौराणिकीं शुभाम् ॥२९॥

हे देवि ! कामना की सिद्धि को देने वाली, सौम्य, सब विघ्नों का नाश करने वाली श्रीरामार्चा को कहता हूँ। हे शोभने ! रामार्चा करके कोई मनुष्य दुख नहीं पाता। श्रीरामार्चा से बढ़ कर यज्ञ, श्रीरामार्चा से बढ़कर तप, श्रीरामार्चा से बढ़कर दान, श्रीरामार्चा से बढ़कर जप एवं श्रीरामार्चा से बढ़कर पुण्य तीनों लोकों में नहीं है। श्रीरामार्चन परम सेव्य एवं श्रेष्ठ व वद्धोद्धारक है। यह परम सिद्धि देने वाला मंगलमय, सब इच्छित फलों को देने वाला है। महासिद्धि देने वाला, सौम्य सब इच्छित फलों को देने वाला, शीघ्र सब अरिष्टों का हरण कारक और सब उपद्रवों का नाशक है। दैहिक तथा मानसिक व्यथा को हरण करने वाला, इच्छा से अधिक फल देने वाला, पुत्रपौत्रादि का सुख देने वाला, बल-वीर्य

Scanned with CamScanner

बढ़ाने वाला है। नष्ट राज्य वालों को राज्य देने वाला, धन-हीनों को धन देने वाला, दुर्भिक्ष में वर्षा कराने वाला एवं बड़े-बड़े उत्पातों का निवारक है। शत्रु सेनाओं का नाश करने वाला, मित्र-वर्गों को बढ़ाने वाला, महा-दरिद्रता और दुर्भाग्यों को दूर करने वाला व दुःखितों को सुख देने वाला है। सौभाग्य और सन्तति देने वाला, सब तरह के ऐश्वर्य और सुखों को देने वाला, क्षय, मृगी, कोढ़ आदि महारोगों का नाश करने वाला है। ऋण-भार को हरण करने वाला, ग्रहों के उपद्रवों को निवारण करने वाला, क्रोध एवं मत्सरता को हरण करने वाला, दोष और दुर्बुद्धि का नाश करने वाला है। क्षमा, सुशीलता, सहृदयता और सद्गुणों का प्रकाशक, तीनों काल का ज्ञान पैदा कराने वाला, छहों विकारों (जन्म लेना, सत्ता रखना, बढ़ना, विकृत, क्षीणता तथा नाश) को नाश करने वाला है। मुमुक्ष पुरुषों को मुक्ति दायक, अगतियों को गति देने वाला, महा संकटों से सन्तप्त चित्त वालों के सुख को बढ़ाने वाला श्रीरामार्चन ही है। हे देवि! श्रीरामार्चन के बिना सब इच्छित फलों को देने वाला अन्य साधन नहीं देखता हूँ और न मैंने कभी सुना ही है। कल्याणों के चाहने वाले सब प्राणियों के लिए रामार्चा ही सिद्धिरूपा है। इसे छोड़कर होम, सद्व्रत, तीर्थ, तपस्या और यज्ञों एवं अन्य उग्र जनों से या प्रलोभन देने वाले सुख साधनों से क्या प्रयोजन है?

होमः – देवताओं के उद्देश्य से अग्नि में घृत आदि डालना (हवन) यह वायु मण्डल शुद्ध कर विश्व-कल्याण का काम करता है । इससे भौतिक लाभ भी है ।

तीर्थः – तरति पापादिकं यस्मात् । 'तृ' धातु से 'थक्' प्रत्यय जोड़ने पर तीर्थ शब्द बना है । उसका शाब्दिक अर्थ है – जिसके द्वारा तरा जाय ।

तीर्थ तीन हैं :–

१. नित्य तीर्थ – कैलाश, मानसरोवर, काशी आदि ।

२. भगवदीय तीर्थ – भगवान के अवतार, लीला भूमि एवं भक्त को दर्शन देने का स्थान ।

३. सन्त तीर्थ– सन्त तथा गुरु की सत्संगति एवं शास्त्र-पुराणादि के श्रवण का स्थान ।

तपस्या – तप, व्रतचर्या ।

यज्ञः – इज्यते हविर्दीयतेऽव, इज्यन्ते देवता अत्र वा यागः ।

हे देवि! श्रीरामार्चन से कोई अभीष्ट दुर्लभ नहीं है । मनुष्य जिन-जिन कामनाओं का

चिन्तन करता है, श्रीरामार्चा से उन्हें अवश्य पाता है । इस लोक में जो बहुत से दूसरे-दूसरे साधन हैं, वे हे देवि ! श्रीरामार्चन के बिना कभी भी सिद्ध नहीं होते हैं । श्रीरामार्चा न कर अन्य व्रतादिकों को करने वाला हजारों-करोड़ों कल्पों तक भी उनके फल का भागी नहीं होता । ग्रहों में जैसे सूर्य और नक्षत्रों में जैसे चन्द्रमा है, वैसे ही सभी शुभ कर्मों में श्रीरामार्चा श्रेष्ठ है, यहां मैं तुमसे पुराण की शुभ कथा कहूँगा ।। १२-२९ ।।

प्रलयान्ते महाविष्णोर्नाभिकञ्जाज्जगद्गुरुः ।
जातः सर्वतमोभूतं विश्वं दृष्ट्वाऽतिदुःखितः ।।३०।।

एकाकी कमले तिष्ठन् किं करोमीत्यचिंतयत् ।।३१।।

तदाऽऽकाशेऽभवद्वाणी ब्रह्माणं कमलोद्भवम् ।
ब्रह्मन् ! कुरु महासृष्टिं वृत्तिजां त्वर्थसंकुलाम्।।३२।।

सृष्ट्यै बहुविधां चिन्तां चकार मनसा विधिः।
न सृष्टिकरणे शक्तो बभूव चतुराननः ॥३३॥
तदा चिन्ताकुलो ब्रह्मा संस्मार परमेश्वरम्।
योमेऽकार्षीत्समुत्पत्तिं यो मावाक्यैरबोधयत् ॥३४॥
कर्त्ता कारयिता सोऽद्य भवेन्मे दृष्टिगोचरः।
तस्याऽहं शरणं प्राप्तो भूयो भूयो नमो नमः ॥३५॥
ब्रह्मणःस्मरणाद् देवि! महाविष्णुस्सनातनः।
प्राप्तो वाक्यमुवाचेदं ब्रह्मन्! रामार्चनं कुरु ॥३६॥
श्रुत्वा ब्रह्मा नमस्कृत्य संस्तुत्योवाच सादरम्।
देवदेव! कथं कुर्या रामार्चा तद्वदाऽधुना ॥३७॥

श्रीभगुवानुवाच –

श्रृणुष्वाव हितो ब्रह्मन्! रामार्चा सर्वसिद्धिदाम् ।
यतं कृत्वा मानवाः सर्वे सर्वसौभाग्यसत्तमाः ।।
तद्विधिः संप्रवक्ष्यामि सावधानोऽवधारय ।।३८।।

प्रलय के अन्त में महाविष्णु के नाभिकमल से जगद्‌गुरु ब्रह्मा उत्पन्न हुए। वे सम्पूर्ण संसार को अन्धकारमय देखकर, अति दुःखित हुए । वे कमल पर अकेले रहकर क्या करूँ, यह विचार करने लगे । तब कमलोद्-भव ब्रह्माजी के प्रति आकाशवाणी हुई हे ब्रह्मन्! वृत्तिजा एवं अर्थसकुला महासृष्टि करो तब ब्रह्मा सृष्टि के लिए अनेक प्रकार से चिन्ता करने लगे । जब चतुरानन सृष्टि करने में समर्थ न हुए तब चिन्ताकुल ब्रह्मा ने परमेश्वर का स्मरण किया । जिसने मुझे उत्पन्न किया है और जिसने मुझे वाक्यों से ज्ञान दिया है, वे करने और कराने वाले आज मुझे दृष्टिगोचर हों । मैं उनकी शरण प्राप्त हूँ। उन्हें मेरा बारम्बार नमस्कार है । ब्रह्मा जी के स्मरण करने से सनातन महाविष्णु प्रकट हुए और यह वाक्य बोले – हे ब्रह्मा ! रामार्चन करो । यह सुनकर ब्रह्मा सादर नमस्कार और स्तुति करके

Scanned with CamScanner

बोले – हे देवाधिदेव ! इस समय आप यह कहें कि श्री रामार्चा कैसे करूँ ? श्री भगवान् बोले – हे ब्रह्मन् ! सावधान होकर सर्व सिद्धियों को देने वाली श्रीरामार्चन विधि का श्रवण करो, जिसे करके सभी मानव सर्व सौभाग्य सत्तम बन जाते हैं। उसकी विधि मैं सम्यकरूपेण कहता हूँ, सावधान होकर धारण करो ।। ३०-३८ ।।

रामभक्तान्समाहूय वन्धुवर्गान् सुहृद् द्विजान् ।
सद्भक्त्या तोषयेत्सर्वान्सर्वाभीष्टार्थसिद्धये ।।३९।।

पञ्चम्यां पञ्चदश्यां वा द्वादश्यां संक्रमेऽयने ।।४०।।

नवम्याञ्चाप्यमावस्यां यस्मिन्कस्मिन् दिनेऽथवा ।
मध्याह्वे वा प्रदोषे वा रामार्चा कारयेत्सुधीः ।।४१।।

आदौ पुण्यस्थले चैव सुजले च मृदा तदा ।
शोधितायां धरायां च विरचेन्मण्डपं शुभम् ।।४२।।

रक्तवितान संयुक्तं स-पताकं स-तोरणम् ।
मनोहरैश्चतुर्द्वारैः शोभनं श्रद्धयाऽन्वितम् ॥४३॥

द्वारेषु पूर्णकुम्भाश्च सहचित्रान् स-पल्लवान् ।
सदीपान् पट्टिकायुक्तान् तण्डुलोपरि स्थापयेत् ॥४४॥

रोपयेत् कदलीस्तम्भाश्चतुष्कोणेषु सफलान् ।
तन्मध्ये चतुरस्रं च पीठकं श्लक्ष्णमुत्तमम् ॥४५॥

पीतास्तरणसंयुक्तं संस्थाप्य वरशोभनम् ।
शालितण्डुल चूर्णैश्च नीलपीतसितासितैः ॥४६॥

एक विंशति कोष्ठं वै यन्त्रं तत्रैव कारयेत् ।
तस्य मध्ये रघुवरं परिवारं - समन्वितम् ॥४७॥

सम्यगावाहयेद् भक्त्या माहेश्वर्यादि पूर्वकम् ।
गौरी गणेशयोः ब्रह्मन् ! पूजयेत्पुरतः स्थितम् ॥४८॥

पूर्वभागे महाशक्तिं पूजयेद्विधि पूर्वकम् ।
महालक्ष्मीं दक्षिणे च महादुर्गां च पश्चिमे ॥४९॥

गायत्री सावित्रीं वाणीं सर्वमातृस्तथोत्तरे ।
सिद्धिं बुद्धिं तथेशाने चाऽऽग्नेय्यां लोकमातरम् ॥५०॥

नैर्ऋत्यां च महादेवीं वायव्ये देवमातरम् ।
पूर्वेशानदिशोर्मध्ये ग्रहाणां पूजनं चरेत ॥५१॥

पूर्वाऽग्नि मध्ये दिक्पालानग्नि-याम्यान्तरे शिवम् ।
याम्यनैर्ऋत्ययोर्मध्ये वास्तुदेवान्समर्चयेत् ॥५२॥

अष्टौ लोकपतीन् वीरान् रक्षोवारुणकान्तरे ।
प्रत्यङ्मुखं वसिष्ठादीन् वायु-वारुण-मध्यगान् ॥५३॥

पवनोत्तरदिग्भागे चाऽधि - प्रत्याधि - देवताः।
उत्तरेशानयोर्मध्ये ब्रह्मपूजां समाचरेत् ॥५४॥

अयोध्यां पूजयेन्मध्ये चोत्तरे सरयूं तथा।
गङ्गां पूर्वे तथा याम्ये भूशक्तिं च समर्चयेत् ॥५५॥

पुनर्याम्ये नलं-नीलं केशरिणं सुषेणकम्।
ऋक्षराजमङ्गदं च सुग्रीवं च समर्चयेत् ॥५६॥

पश्चिमे वै तथा शक्तीर्विमलादींश्च पूजयेत्।
पराभक्तियुतं नित्यं विभीषणमथोत्तरे ॥५७॥

पूर्वेऽष्टौ मंत्रिणः पूज्याः सर्वशास्त्रविशारदाः।
पङ्क्ति स्यन्दनकं पूर्वे कौशल्यादिभिरन्वितम् ॥५८॥

दक्षिणे लक्ष्मणं पश्चाच्छत्रुघ्नं च सशक्तिकम् ।
उत्तरे भरतञ्चैव सशक्तिं च समर्चयेत् ।।५९।।
हनुमन्तं पूर्वभागे क्रमेणैव समर्चयेत् ।
ततः प्रधानपुरुषं श्रीरामं हि समर्चयेत् ।।६०।।

श्रीराम भक्तों, भाई बन्धुओं, मित्रों और ब्राह्मणों को बुलाकर अर्चक अभीष्ट की सिद्धि हेतु भक्ति भाव से सबको सन्तुष्ट करे। बुद्धिमान् पंचमी, पूर्णिमा, द्वादशी, अयन के संक्रमण काल में, नवमी, अमावस्या अथवा जिस किसी भी दिन दोपहर में अथवा प्रदोष (सांयकाल) में श्रीरामार्चा करे। पहले पुण्य स्थल पर स्वच्छ जल और मिट्टी से शुद्ध की हुई भूमि पर सुन्दर मण्डप बनावे। श्रद्धायुक्त होकर उस मण्डप को लाल चांदनी, पताका, तोरण और मनोहारी चार द्वारों से शोभायमान करे। चारों द्वारों पर चावलों के ऊपर सवस्त्र, सदीप, सपल्लव एवं केशर चन्दनादि से चित्रित, जलपूर्ण कलशों को स्थापित करे। चारों कोनों पर फल सहित कलशों के खम्भे लगा दे। मण्डप के बीच में चौकोना पीठ (चौकी) जो बराबर चिकना और सुन्दर हो – स्थापित करे। सुन्दर पीतवस्त्र बिछौने से युक्त

चौकी स्थापित करके उस पर नीले, पीले, श्वेत एवं श्याम रंग मे चावलों को रंग कर इक्कीस कोष्ठ का यन्त्र बनावे। उसके मध्य में माहेश्वर आदि आवरण देवों के सहित परिवारयुक्त श्री रघुनन्दन का भक्तिपूर्वक सम्यक रूप से आवाहन करे । हे ब्रह्मन ! अग्रभाग में स्थित गौरी-गणेश्वर को पूजे । पूर्व भाग में विधि-पूर्वक महाशक्ति को पूजे । दक्षिण में महालक्ष्मी का, पश्चिम में महादुर्गा का और उत्तर में गायत्री, सावित्री, सरस्वती और सर्वमाताओं का पूजन करे । ईशानकोण में सिद्धि-बुद्धि का और अग्निकोण में लोकमातृका का, नैऋत्य में महादेवी का तथा वायव्य-कोण में देव माता का, पूर्व और ईशान के मध्य ग्रहों का पूजन करे । पूर्व और अग्निकोण के मध्य दिग्पालों का अग्निकोण तथा दक्षिण दिशा के मध्य शिव का, दक्षिण और नैऋत्य के मध्य वास्तुदेव का पूजन करे । नैऋत्य एवं पश्चिम दिशा के मध्य अष्ट लोकपालों का, पश्चिम में मनु का एवं पश्चिम और वायुकोण के मध्य वशिष्ठादि का पूजन करे । वायुकोण तथा उत्तर दिशा के मध्य अधिदेवता, प्रत्यधि देवताओं का तथा

उत्तर एवं ईशान कोण के मध्य ब्रह्मा का पूजन करे ।

यन्त्र के मध्य में श्री अयोध्या जी को तथा उत्तर में श्री सरयू जी को पूजे । पूर्व में श्री गङ्गा जी को तथा भूशक्ति को दक्षिण में पूजे । फिर नल-नील, केशरी, सुषेण, जाम्बवान, अंगद और सुग्रीवजी को दक्षिण में पूजे । पश्चिम में विमलादि शक्तियों को पूजे । नित्य पराभक्तियुक्त श्री विभीषण जी को उत्तर में पूजे । सर्वशास्त्र विशारद् आठों मन्त्रियों की पूर्व में पूजा करे ।

श्रीकौशल्यादि रानियों के साथ महाराज दशरथ का पूर्व में पूजन करे । दक्षिण में सशक्ति लक्ष्मण, पश्चिम में सशक्ति शत्रुघ्न और उत्तर में सशक्ति भरत की पूजा करे। पूर्व भाग में श्रीहनुमान जी की पूजा करे । क्रमशः इस प्रकार सबका पूजन करके प्रधान पुरुष श्रीराम जी का सम्यक प्रकार से पूजन करे ।।३९-६० ।।

पाद्या-ऽर्घ्या-ऽऽचमनीयाद्यैः स्नानैः पञ्चामृतादिभिः।
पीताम्बरोपवीतैश्चन्दनै सतुलसीदलैः।।६१।।

यवाक्षततिलैः पुष्पै मालादूर्वाङ्कुरैः शुभैः ।
धूपदीपैः सुनैवेद्यैस्तांबूलैश्च सुगन्धिभिः ।।६२।।

मोदकाद्यं सुनैवेद्यं पञ्चसेटोत्तरं वरम् ।
नानाविधैः सुपक्वान्नैः सुस्वादुभिः फलैस्तथा ।।६३।।

नारिकेल बलिं दद्यान्नीराजनमतः परम् ।
चतुः प्रदक्षिणं कृत्वा प्रणमेत्प्रार्थयेत्पुनः ।।६४।।

प्रसादो रामभद्रस्य प्रदातव्यो हनुमते ।
प्रहृष्टो वायुतनयो वांछितार्थ प्रयच्छति ।।६५।।

कुर्यादेवं विधानेन रामार्चा भक्तितो विधे ।
यथाविभवविस्तारो वित्तशाठ्यं न कारयेत् ।।६६।।

सुवर्णप्रतिमा मध्ये, शालिग्राम शिलोपरि।
तिलपुञ्जेऽथवा पूजा कर्तव्या राघवस्य च ।।६७।।

पाद्य अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क, पंचामृतादि से स्नान, पीताम्बर, यज्ञोपवीत, चन्दन, तुलसीदल, यव, अक्षत, तिल, पुष्प, माला, दूब के सुन्दर और कोमल अंकुरों से, धूप से, दीप से, सुन्दर नैवेद्य से एवं सुगन्धित ताम्बूलों से प्रधान पुरुष श्रीराम जी की पूजा करे। अनेकों प्रकार के सुन्दर पक्वान्नों, स्वादिष्ट फलों तथा मोदक (लड्डू) आदि से युक्त पाँच सेर से अधिक नैवेद्य श्रेष्ठ होता है। पुनः नारियल भेंट चढ़ावे। तदनन्तर आरती करे। चार बार प्रदक्षिणा करके दण्डवत् प्रणाम करे और प्रेम से प्रार्थना करे। श्रीरामचन्द्र जी का प्रसाद श्रीहनुमान जी को देना चाहिए। इससे श्री हनुमानजी प्रसन्न होकर वांछित पदार्थ देते हैं। हे ब्रह्मन्! इस विधान से भक्तिपूर्वक रामार्चा करनी चाहिए। विभव के अनुसार विस्तार से करे। वित्तशाठ्य (धन की कंजूसी न करे।) सुवर्ण की प्रतिमा में, शालिग्राम की शिला पर अथवा तिलों की राशि पर भगवान श्रीराघवजी की पूजा करनी चाहिए।। ६१-६७ ।।

पूर्व बाल्ये त्वया वत्स मन्दाकिन्यास्तटे शुभे ।
चित्रकूटे कृता सृष्ट्यै श्रीरामार्चा ममाऽऽज्ञया ।।६८।।

पूजान्ते तु महाभाग ! प्रादुर्भूतो रघूत्तमः ।
तुभ्यं वरप्रदानं च दत्वाऽन्तर्ध्यानमागमत् ।।६९।।

रामप्रसादं भक्तेभ्यो दत्वा भुक्तस्त्वया तदा ।
पूर्णं बभूव तेऽभीष्टं यद्यन्मनसि कांक्षितम् ।।७०।।

रामार्चायाः प्रसादं यो भुञ्जीत प्रेममानसः ।
बन्धून विभज्य तस्याऽशु मनोभीष्टं भवेद्ध्रुवम् ।।७१।।

रामार्चायाः प्रसादं तु न भुञ्जीत विधे यदि ।
महादुःखार्दितो भूत्वा रौरवे नरके ब्रजेत् ।।७२।।

ब्रह्महत्यादिकं पापं मनोवाक्काय कर्मजम्।
कोटि जन्मार्जितं नश्येद्रामभुक्तान्नभक्षणात्॥७३॥

एवं यः कुरुते ब्रह्मन् रामार्चा सद्विधानतः।
तस्य क्षिप्रं भवेत्सिद्धिर्मनोऽभिलषितापुरा॥७४॥

इत्युक्त्वान्तर्दधे विष्णुर्ब्रह्मालोकपतिः शुभे।
चकार रामपूजां च तया सर्वेप्सितार्थभाक्॥७५॥

ब्रह्मणा चिंतितं यद्यत्ततदाप्तं हि सत्वरम्।
ब्रह्मलोके प्रकुर्वन्ति देवा रामार्चनं सदा॥७६॥

तत्प्रभावेन ते सर्वे परमानन्दशालिनः।
भुन्जते विविधान् भोगान् सर्वेषामपिदुर्लभान्॥७७॥

हे वत्स ! पहले बाल्यावस्था में श्री मन्दाकिनी के शुभ तट पर श्री चित्रकूट

में मेरी आज्ञा से सृष्टि-हेतु तुमने रामार्चा की थी । हे महाभाग ! पूजा के अन्त में श्री राम जी प्रकट हुये और तुम्हें वर प्रदान कर अर्न्तध्यान हो गये । श्रीराम जी का प्रसाद भक्तों को देकर तुमने खाया, तब जो-जो तुमने मन में विचारा था, वह अभीष्ट तुम्हारा पूर्ण हुआ था। जो प्रेमी श्री रामार्चा का प्रसाद बन्धुजनों को बांटकर खायेगा, उसका मनोरथ निश्चय ही शीघ्र पूर्ण होगा । हे ब्रह्मन् ! श्रीरामार्चा का प्रसाद जो नहीं खायेगा वह महादुखी होकर रौरव नरक में जावेगा । (क्योंकि, त्याज्य वह वस्तु है, जिसके ग्रहण से पाप हो, श्रीरामार्चा का प्रसाद तो पाप निवारण करता है) । मन, वचन, काया, कर्म जनित कोटि जन्मों के ब्रह्महत्यादि पाप भगवान् राम का प्रसाद पाते ही नष्ट हो जाते हैं । (ऐसे प्रसाद को त्यागने वाला दुखी क्यों नहीं होगा ? अवश्यमेव होगा,) हे ब्रह्मन् ! विधि विधान के साथ इस प्रकार जो श्रीरामार्चा करता है, उसके मन की अभिलाषायें शीघ्र ही पूरी हो जाती हैं । हे शुभे पार्वति ! इतना कहकर महाविष्णु अर्न्तध्यान हो गये । लोकपति ब्रह्मा जी ने श्रीरामार्चा की । उससे वे सभी अभीष्ट पदार्थों के भागी बने । ब्रह्मा जी ने जो-जो सोचा, वह सब उन्हें तुरन्त प्राप्त हो गया। ब्रह्मलोक में देवगण सर्वदा श्रीरामार्चा करते हैं । श्रीरामार्चा के

प्रभाव से वे सब परमानन्द-युक्त रहते हैं और विविध प्रकार के भोगों को भोगते हैं, जो सबके लिए दुर्लभ है ।। ६८-७७ ।।

इति श्रीशिवसंहितायां भव्योत्तर खण्डे श्रीरामार्चा माहात्म्य वर्णनपूर्वकं सप्रधानावरण देवता-पूजाविधि-वर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ।।३।।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

श्रीपार्वत्युवाच —

कैः कैः कृता पुरा देव रामार्चा तद्वदाधुना।
श्रोतुमिच्छामि देवेश मम हर्षविवर्द्धनः ।।१।।

श्रीपार्वती जी ने कहा — हे देवेश ! पहले किन-किन महात्माओं ने रामार्चा की है, हे देव ! इस समय आप कहें। हे नाथ ! हर्ष को बढ़ाने वाले रामार्चा को मैं श्रवण करना चाहती हूँ ।।१।।

श्रीशिव उवाच —

श्रृणु देवि कथां पुण्यां पूजा माहात्म्य संयुताम् ।
वक्ष्यामि सर्व मर्त्येभ्यः शुभदां पापमोचनीम् ॥२॥

कश्चिद्वसति धर्मज्ञो ब्राह्मणः मथुरा पुरे ।
नाम्नां पृथुक विख्यातो महारोगेण पीडितः ॥३॥

बहुभिर्विधिभिर्यत्नं कृतवान् ब्राह्मणोत्तमः ।
न मुक्तो रोगबाधाभिर्महादीनमनोद्विजः ॥४॥

निर्जगाम गृहात्तूर्णं वनं व्याघ्रादिर्भियुतम् ।
वभ्राम दुःख संत्रस्तो मृत्योर्हेतुं विचिंतयन् ॥५॥

आत्महत्या भयाद्देवि न विपैस्त्यक्तवांस्तनुम् ।
भ्रमन्भृगुसुतं तत्र ऋचीकं दृष्टवान् द्विजः ॥६॥

नत्वा रुरोद दुखार्तो महाबाधा प्रपीडितः ।
ऋचीको ब्राह्मणं प्राह कस्माद्रोदषि तद्वद् ॥७॥

ऋचीकेरितमाकर्ण्य पृथुको वाक्यमब्रीत् ।
ब्राह्मणोऽहं द्विजश्रेष्ठ विख्यातः पृथुकाह्वयः ॥८॥

सर्व व्याधियुतोविद्धन्महारोगेण पीडितः ।
येनदुःख मम क्षीयेत् तद्वदस्व कृपानिधे ॥९॥
श्रुत्वा कृपान्वितो विप्रो रामार्चा कुरु प्रोक्तवान् ।

श्रीपृथुक उवाच –

रामार्चायाः विधिविद्धन्कथयस्व परंतप ॥१०॥

श्री शिवजी बोले – हे देवि ! सुनो । सब मनुष्यों को मङ्गल देने वाली, पापनाशिनी, पूजा पवित्र माहात्म्य के सहित कहता हूँ । मथुरा नगर में एक धर्मज्ञ ब्राह्मण

रहता था। वह पृथुक नाम से प्रसिद्ध था और महारोग से पीड़ित था। उस श्रेष्ठ ब्राह्मण ने अनेकों प्रकार के यत्न किये, परन्तु वह रोग की बाधाओं से मुक्त नहीं हो सका। इससे उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। यह शीघ्र घर से निकल गया और दुखी होकर व्याघ्र आदि से संयुक्त निर्जन वन में भटकने लगा। वह मृत्यु का निमित्त ढूँढ रहा था (कि जिससे मृत्यु हो जाय)। हे देवि ! आत्महत्या के पाप के भय से उसने विष खाकर अपने शरीर का त्याग नहीं किया। घूमते हुए उस ब्रह्मण ने वहां भृगु जी के पुत्र ऋचीक जी को देखा। वह ब्राह्मण दुःख से आर्त्त होकर ऋचीक के चरणों में प्रणाम करके रोने लगा। ऋचीक ने महाबाधा से पीड़ित उस ब्राह्मण से कहा – तुम क्यों रो रहे हो ? वह कारण बताओ। ऋचीक के वचन को सुनकर पृथुक ने कहा कि हे द्विजश्रेष्ठ ! मैं पृथुक नाम का विख्यात ब्राह्मण हूँ। हे विद्वान् ! मैं सर्वव्याधियों से युक्त और महाबाधाओं से पाड़ित हूँ। हे कृपानिधे ! जिससे मेरा दुःख नष्ट हो, वह उपाय कहिए। यह सुनकर कृपालु ऋचीक जी ने कहा कि तुम रामार्चा करो। पृथुक बोला कि हे विद्वान् परंतप ! श्रीरामार्चा की विधि कहिए ।। २-१० ।।

Scanned with CamScanner

श्रुत्वोवाच ऋचीकस्तु श्रृणु विप्र वचो मम ।
कुशनाभसुतौ गाधिः श्वसुरो मम धर्मवित् ।।११।।

सोऽनपत्योऽभवत्पूर्वं तेन दुःखी निरन्तरम् ।
तस्य पुत्री मम पत्नी तयाहं परितोषितः ।।१२।।

प्रहर्षितोहमूचेतां वरं ब्रूहि सुमध्यमे ।
तयोक्तं चैव मे भ्राता भवेद्धरमिदं प्रभो ।।१३।।

तथास्त्विति महाभागे प्रोक्त्वा चाहं भृगुं गतः ।
भृगुः ब्रह्मविदं विप्र वृत्तान्तं तन्निवेदितम् ।।१४।।

श्रुत्वा भृगुरुवाचेदं गाधिपुत्राय भो सुत ।
रामार्चा कारय प्रेम्णा ताभ्यां सम्यग्विधानतः ।।१५।।

Scanned with CamScanner

तत्प्रसादेन सत्पुत्रो भविष्यत्यचिरेण वै ।
श्रुत्वा तद्विधिमागत्य श्वशुरं प्रोक्तवानहम् ॥१६॥

पत्न्या सह कृतं तेन सम्यक् श्रीरामपूजनम् ।
तदा रामप्रसादस्य भक्षणाद् गाधिवल्लभा ॥१७॥

गर्भं दधार धर्मज्ञस्तस्याः पुत्रोऽभवत्किल ।
विश्वामित्रेति विख्यातो योऽभूत्क्षत्राद्द्विजर्षभ् ॥१८॥

भृगोः श्रुतं मयापूर्वं श्रीरामस्यसुपूजनम् ।
सौभाग्यसन्ततिकरं सर्वेप्सितफलप्रदम् ॥१९॥

तस्मात् कुरु महाभागे महायज्ञ सुखप्रदम् ।
ऋचीकेरितमाकर्ण्य जगाम स्वगृहं द्विजः ॥२०॥

यह सुनकर ऋचीक जी बोले – हे विप्र ! मेरे वचन सुनो । कुशनाभ जी के पुत्र धार्मिक (धर्मज्ञ) श्री गाधि जी मेरे श्वसुर हैं । वे पहले अनपत्य (पुत्रहीन) थे, इससे निरन्तर दुःखी रहते थे । उनकी पुत्री (सत्यवती) मेरी पत्नी है, उसने मुझे सेवा से सन्तुष्ट किया। मैंने हर्षित होकर उसको कहा – हे सुभद्रे ! हे सुन्दरी ! वरदान माँगो, तब उसने कहा कि हे प्रभो ! मेरे भाई पैदा हो, यही वरदान दीजिये । हे महाभागे ! ऐसा ही हो । स्त्री को यह कहकर मैं अपने पिता भृगु जी के पास गया । (उसको वरदान देकर मैंने चिन्तन करके देखा, तो मालूम हुआ कि इनके भाग्य में केवल एक कन्या के सिवा कोई संतान नहीं हैं।) तब घबराकर हे विप्र पृथुक ! वह वृतान्त ब्रह्मवेत्ता भृगु जी को निवेदन किया। सब वृतांत सुनकर भृगु जी बोले – हे पुत्र ! गाधिजी को पुत्र होने के लिये उन से प्रेमपूर्वक सम्यक विधि से श्रीरामार्चा कराओ । उसके प्रसाद से अवश्य शीघ्र ही उत्तम पुत्र होगा । पिता जी से श्रीरामार्चा की विधि सुनकर मैंने आकर श्वसुर जी को कहा । उन्होंने सपत्नीक सम्यक् श्रीरामपूजन किया और तब रामप्रसाद के भक्षण से श्री गाधि जी की पत्नी ने गर्भ धारण